साहित्य अकादमी, नई दिल्ली एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ "डॉ. नगेंद्र जन्मशतवार्षिकी" समारोह

(दिनांक 24-25 मई, 2016)

दिनांक 24 मई, 2016 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में "डॉ. नगेंद्र जन्मशतवार्षिकी" समारोह का आयोजन केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सभागार में किया गया।

समारोह के अंतर्गत दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। उद्घाटन सत्र का आरंभ प्रातः 10.30 बजे इंद्रनाथ चौधुरी की अध्यक्षता में आरंभ हुआ। साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य अकादमी महान साहित्यकारों की जन्मशताब्दी समारोहपूर्वक मनाती है। इसी परंपरा के तहत डॉ. नगेंद्र जन्मशतवार्षिकी समारोह का आयोजन किया गया है। साहित्य अकादमी ने केंद्रीय हिंदी संस्थान के साथ मिलकर यह समारोह आयोजित किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आगे भी दोनों संस्थाएँ मिलकर साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करती रहेंगी। उन्होंने सभी आमंत्रित विद्वतजनों के आगमन के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

उद्घाटन सत्र में आरंभिक वक्तव्य देते हुए सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि डॉ. नगेंद्र ने अध्ययन और आरंभिक अध्यापन का कार्य आगरा से ही आरंभ किया। उन्होंने कहा कि 'साकेत' का मर्मोद्घाटन करने वाली नगेंद्र जैसी पुस्तक आज तक दूसरी नहीं लिखी गयी है। उन्होंने 'कामायनी' पर महत्वपूर्ण कार्य किया। डॉ. नगेंद्र ने भारतीय काव्यशास्त्र परंपरा को आत्मसात करते हुए उसे समीक्षा का विषय बनाया, साथ ही पाश्चात्य काव्यशास्त्र के गहन अध्ययन के द्वारा उसके महत्वपूर्ण पक्षों से उन्होंने हिंदी जगत को परिचित कराया। उन्होंने दोनों काव्यशास्त्रों में समन्वय स्थापित किया और भारतीय वांग्मय को समृद्ध किया। डॉ. नगेंद्र ने रस को सार्वभौमिक रूप दिया। रस पर नया चिन्तन किया। बिम्ब पर भी व्यापक कार्य किए। उन्होंने संपादन का महत्वपूर्ण कार्य किया। डॉ. नगेंद्र ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ का संपादन किया।

अगले वक्ता के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण के उपाध्यक्ष कमल किशोर गोयनका ने अपना उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद के साहित्य पर उन्होंने जो भी कार्य किया है उसका श्रेय नगेंद्र जी को है। डॉ. नगेंद्र ने ही प्रेमचंद पर शोध कार्य करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया, साथ ही उन्होंने डॉ. नगेंद्र से संबंधित अनेक प्रसंगों को साझा किया।

अगले वक्ता के रूप में वरिष्ठ आलोचक निर्मला जैन ने संगोष्ठी का बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि साहित्य में नगेंद्र के योगदान को तीन कोटियों में बाँट सकते हैं। गंभीर पाठक के रूप में, अध्यापक के रूप में और प्रशासक के रूप में। डॉ. नगेंद्र अंग्रेजी से हिंदी में आए। वे आगरा के सेंट जोंस कॉलेज में अंग्रेजी के अध्यापक थे। वे 15 वर्ष बाद हिंदी में आए। हिंदी में अध्यापन कार्य आरंभ करने से पूर्व उनकी 5 पुस्तकें प्रकाशित हो

चुकी थीं। उनके पास कार्य करने की निश्चित दृष्टि थी, संकल्प था। डॉ. नगेंद्र ऐसे प्रतिभाशाली शोधार्थी थे कि आगरा विश्वविद्यालय ने उन्हें पीएच.डी. के शोध पर डी.लिट. की उपाधि प्रदान की। उन्होंने कहा कि 1956 से 1971 तक का काल डॉ. नगेंद्रजी का चरमोत्कर्ष काल था। इसी दौरान उनका महत्वपूर्ण कार्य सामने आया। निर्मला जैन ने डॉ. नगेंद्र के पूरे कृतित्व पर प्रकाश डाला। साथ ही उनकी कृतित्व के परिवर्तनों को भी उद्घाटित किया।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि डॉ. नगेंद्र ने दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग को एक अलग पहचान दिलायी। उन्होंने कंपोजिट कोर्स के नाम से नया पाठ्यक्रम आरंभ किया। उन्होंने कहा कि डॉ. नगेंद्र के यहाँ पंथ विशेष के प्रति कोई दुराग्रह नहीं था। उनके यहाँ वैचारिक मतभेद के बावजूद सबका सम्मान था। डॉ. नगेंद्र विजनरी थे, इसीलिए वे हिंदी से भारतीय और भारतीय से विश्व साहित्य तक बढ़े। डॉ. नगेंद्र भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र को पूरक मानते थे और उन्होंने उनका समन्वय किया। डॉ. नगेंद्र ने तुलनात्मक भारतीय साहित्य की शुरुआत की। उनकी अध्यक्षता में दिल्ली विश्वविद्यालय में तुलनात्मक भारतीय साहित्य पर पहला सम्मेलन हुआ।

उद्घाटन सत्र के अंत में केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक नन्द किशोर पाण्डेय ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि डॉ. नगेंद्र की जन्मशतवार्षिकी के लिए अकादमी ने केंद्रीय हिंदी संस्थान को चुना, ये बहुत ही गर्व का विषय है।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक नन्द किशोर पाण्डेय ने की। सत्र के प्रथम वक्ता सुरेश ऋतुपर्ण ने कहा कि डॉ. नगेंद्र ने रेडियो की भाषा पर बहुत कार्य किया है। डॉ. नगेंद्र का काम शास्त्रीयता से जुड़ा था लेकिन उनकी दृष्टि आधुनिक थी। डॉ. नगेंद्र साहित्य के रस को अस्मिता का आस्वाद मानते थे।

अगले वक्ता जयसिंह 'नीरद' ने 'काव्य चिंतन परंपरा और आज की समीक्षा का संकट' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि लोग डॉ. नगेंद्र के काव्य चिंतन को समझे बिना उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हैं। उन्होंने डॉ. नगेंद्र पर लगने वाले आरोपों/आक्षेपों पर भी चर्चा की। नीरद ने शुक्ल जी को उद्धृत करते हुए कहा कि शुक्ल जी ने कहा था कि नगेंद्र की पंत पर लिखी गई पुस्तक छायावाद पर लिखी गई ठिकाने की किताब है।

ज्योतिष जोशी ने कहा कि डॉ. नगेंद्र विलक्षण स्मृति के धनी थे। उन्होंने कहा कि डॉ. नगेंद्र ने भारतीय परंपरा का गहरा अवगाहन किया और उसे भारतीयता के संदर्भ में प्रस्तुत किया।

नन्द किशोर पाण्डेय ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि रेडियो ने डॉ. नगेंद्र को संवेदनशील बनाया। डॉ. नगेंद्र ने पुरानी चीजों को नये संदर्भ में स्थापित किया अथवा पुराने संदर्भों को नए ढंग से पारिभाषित किया। डॉ. नगेंद्र अनगढ़ता पसंद नहीं करते थे। आज नगेंद्र जैसे साहसी समीक्षकों की कमी हो गयी है। डॉ. नगेंद्र ने कामायनी को आलोचना का विषय बनाया। डॉ. नगेंद्र अपनी पुस्तकों में 'साकेत : एक अध्ययन' को महत्वपूर्ण मानते थे।

इस पुस्तक को वे अपनी साहित्य साधना की सफल अभिव्यक्ति कहते थे। अंत में, उन्होंने डॉ. नगेंद्र को भारतीय महाकाव्यों के उद्गाथा, भारतीय विद्या के पुनःस्थापितकर्ता आदि रूपों में याद किया।

<u>दिनांक 25 मई, 2016, संगोष्ठी का द्वितीय एवं तृतीय सत्र</u>

सम्मेलन के दूसरे दिन दिनांक 25 मई, 2016 को आयोजित सत्रों के विषय थे- 'आलोचक नगेंद्र' और 'भाषा एवं अनुवाद'। इन सत्रों में वक्ता के रूप में हरीश कुमार सेठी, अनंत मिश्र, करुणाशंकर उपाध्याय एवं पूरनचंद टंडन उपस्थित हुए। सत्र की अध्यक्षता हरिमोहन ने की।

सत्र के पहले वक्ता हरीश कुमार सेठी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. नगेंद्र के आलोचना कर्म को कालक्रमिक रूप में वर्गीकृत करते हुए विस्तार से विवेचन किया। इसके साथ ही उन्होंने डॉ. नगेंद्र के आलोचक व्यक्तित्व और आलोचकीय दृष्टि के प्रसार को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि डॉ. नगेंद्र ने चिन्तन में अनुभूति को विशेष महत्व दिया है। डॉ. नगेंद्र की रचना यात्रा की शुरुआत कविता से हुई। बाद में वे शास्त्रीय आलोचना की ओर मुड़ गए। डॉ. नगेंद्र ने आलोचना का मानदंड रस सिद्धांत को मानते हुए भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन की पद्धति का सूत्रपात किया, इस प्रक्रिया में अनुवाद को समुचित महत्व दिया। साथ ही सहयोगात्मक इतिहास लेखन की परंपरा की नींव डाली।

अनंत मिश्र ने कहा कि परिवर्तनगामी समय के संदर्भ में डॉ. नगेंद्र का चिंतन एवं स्मरण वस्तुतः उनका पुन:पाठ करना है। यह पुन:पाठ पीढ़ियों के अंतराल में किसी भी लेखक और आलोचक को समझने की प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है। डॉ. नगेंद्र के आलोचना कर्म पर आलोचनात्मक दृष्टि डालते हुए उन्होंने कहा कि रसवाद को व्यापक रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय डॉ. नगेंद्र का है। उन्होंने रस को तकनीकी पद्धति से मुक्त कर सार्वभौम बनाया।

मुंबई से पधारे करुणाशंकर उपाध्याय ने डॉ. नगेंद्र के विपुल रचना कर्म का स्मरण करते हुए कहा कि गुण और परिमाण दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हुए भी डॉ. नगेंद्र के आलोचनात्मक चिंतन का गहराई से मूल्यांकन करने की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। उनका लेखन सामान्य पाठकों के लिए चुनौती भरा है। उनकी रचना-दृष्टि पूर्व और पश्चिम के द्वंद्व से निर्मित हुई है। उनके कार्य का महत्व इसलिए भी है कि उन्होंने भारत और पश्चिम की महत्वपूर्ण शास्त्रीय कृतियों को हिंदी में उपलब्ध कराया जिससे भावी आलोचना को मजबूत सैद्धांतिक आधार मिला।

पूरनचंद टंडन ने डॉ. नगेंद्र की आलोचना और उनकी भाषा पर प्रकाश डाला और बताया कि डॉ. नगेंद्र के परिप्रेक्ष्य में उनकी भाषा को समझने की जरूरत है। उन्होंने आगे कहा कि डॉ. नगेंद्र के अनुवाद कार्य के कारण ही आज हम 'अरस्तू' और 'लोंजाइनस' को जानते हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. नगेंद्र ने भारतीय अनुवाद परिषद की स्थापना में महत्वपूर्ण

भूमिका का निर्वहन किया। उन्होंने लघु अवधि पाठ्यक्रम तथा तुलनात्मक पाठ्यक्रम आरंभ कराकर भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की नींव रखी।

सत्र के अध्यक्ष हरिमोहन ने सभी वक्ताओं के वक्तव्यों का समाहार करते हुए कहा कि डॉ. नगेंद्र ने अपने चिंतन में शब्द चयन और शब्द की प्रामाणिकता पर विशेष ध्यान दिया। आचार्य शुक्ल की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए रस सिद्धांत को उन्होंने हिंदी भाषा साहित्य के अनुरूप नया कलेवर और प्रतिष्ठा प्रदान की। डॉ. नगेंद्र के व्यक्तित्व के विविध आयाम उनके रचनाकर्म में भी परिलक्षित होते हैं। हिंदी काव्यशास्त्र और आलोचना में उनकी प्रासंगिकता आज भी बरकरार है।

कार्यक्रम का संचालन कुमार अनुपम, संपादक, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा अनुपम श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने किया।